Volume 3, Issue 2, February 2017 ISSN NO: 2454 - 2326

North Asian International Research Journal Consortium

North Asian International Research Journal

Of

Multidisciplinary

Chief Editor
Dr. Nisar Hussain Malik

Publisher
Dr. Bilal Ahmad Malik

Associate Editor
Dr.Nagendra Mani Trapathi

CIF IMPACT FACTOR: 4.465

NAIRJC JOURNAL PUBLICATION

North Asian International Research Journal Consortium

Welcome to NAIRJC

ISSN NO: 2454 - 2326

North Asian International Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi, Urdu all research papers submitted to the journal will be double-blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in Universities, Research Institutes Government and Industry with research interest in the general subjects

Editorial Board

J.Anil Kumar Head Geography University of Thirvanathpuram	Sanjuket Das Head Economics Samplpur University	Adgaonkar Ganesh Dept. of Commerce, B.S.A.U Aruganbad
Kiran Mishra Dept. of Englig,Ranchi University, Jharkhand	Somanath Reddy Dept. of Social Work, Gulbarga University.	Rajpal Choudhary Dept. Govt. Engg. College Bikaner Rajasthan
R.D. Sharma Head Commerce & Management Jammu University	R.P. Pandday Head Education Dr. C.V.Raman University	Moinuddin Khan Dept. of Botany SinghaniyaUniversity Rajasthan.
Manish Mishra Dept. of Engg, United College Ald.UPTU Lucknow	K.M Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	Ravi Kumar Pandey Director, H.I.M.T, Allahabad
Tihar Pandit Dept. of Environmental Science, University of Kashmir.	Simnani Dept. of Political Science, Govt. Degree College Pulwama, University of Kashmir.	Ashok D. Wagh Head PG. Dept. of Accountancy, B.N.N.College, Bhiwandi, Thane, Maharashtra.
Neelam Yaday Head Exam. Mat.K..M .Patel College Thakurli (E), Thane, Maharashtra	Nisar Hussain Dept. of Medicine A.I. Medical College (U.P) Kanpur University	M.C.P. Singh Head Information Technology Dr C.V. Rama University
Ashak Husssain Head Pol-Science G.B, PG College Ald. Kanpur University	Khagendra Nath Sethi Head Dept. of History Sambalpur University.	Rama Singh Dept. of Political Science A.K.D College, Ald.University of Allahabad

Address: -North Asian International Research Journal Consortium (NAIRJC) 221 Gangoo, Pulwama, Jammu and Kashmir, India -192301, Cell: 09086405302, 09906662570, Ph. No: 01933-212815,
Email: nairjc5@gmail.com, info@nairjc.com **Website:** www.nairjc.com

CIF IMPACT FACTOR: 4.465

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी छात्रो की निर्देशन की आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

हेमा मेहरा

हेमा मेहरा [1] तथा प्रो आर एस पथनी [2]

[1] अनुसंधान विद्वान
[2] शोध निर्देशक :
प्रो आर एस पथनी
शिक्षा संकाय
;एमए एम एड, पी–एच डी
कु वि वि परिसर,अल्मोड़ा ;
उत्तराखण्ड

सार–

शैक्षिक व्यवस्था के समय से ही विद्यार्थी किसी ना किसी समस्या का सामना करता रहता है तथा जहा समस्या का सामना करता रहता है तथा जहा समस्या होगी वहा निर्देशन की आवश्यकता भी होती रहेगी। अध्ययन के उद्देश्य– माध्यमिक स्तर के छात्रो की समस्याओ का अध्ययन करना तथा माध्यमिक स्तर के छात्रो के निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना है। उददेश्यों को ध्यान में रखते हुए एक प्रश्नावली तैयार की गयी तथा गुच्छा न्यादर्श विधि द्वारा आकड़े एकत्र किये गये । तथा आकड़े एकत्र करने के पश्चात् टी परीक्षण द्वारा विश्लेषण किया गया । माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रो व शहरी छात्रो की समस्याओ का विश्लेषण करते हुए यह कहा जा सकता है की माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रो को निर्देशन की अधिक आवश्यकता है । परन्तु माध्यमिक स्तर के सभी छात्रो को अनेक समस्याएँ है अतः सभी छात्रो को निर्देशन की आवश्यकता है।

प्रस्तावना

मानव एवं समाज के रचनात्मक विकास हेतु शिक्षा का महत्वपूर्ण कारक है जिससे समाज में वैज्ञानिक परिवेश सृजन करने की प्रक्रिया को बल मिलता है। व्यक्ति में दक्षता ज्ञान कौशल एवं क्षमता का विकास होता है। विशेष रूप से मजबूत लोकतंत्र में राष्ट्रीय एकता सामाजिक आर्थिक परिवर्तन न्यायसंगत समाज की स्थापना तथा अन्ततः मानव संसाधन विकास के दिक्षा देने के लिए शिक्षा एक सबल अस्त्र है (गुप्त 2003, बहुगुणा 2006)।

भारत वर्ष में शिक्षित समाज के विकास एवं निरक्षरता उन्मूलन की सतत प्रयासों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। मानव प्रगति का एक महत्वपूर्ण आधार शिक्षा है और इसी आधार पर मानव सभ्यता का विकास हुआ है (श्रीवास्तव, 2000) इस देश की संस्कृति जितनी प्राचीन है उतनी ही यहा की शैक्षिक व्यवस्था भी है, शैक्षिक व्यवस्था के समय से ही विद्यार्थी किसी ना किसी समस्या का सामना करता रहता है तथा जहा समस्या का सामना करता रहता है तथा जहा समस्या होगी वहा निर्देशन की आवश्यकता भी होती रहेगी।

निर्देशन प्राणी के पृथ्वी पर प्रादुर्भाव के समय से ही किसी न किसी रूप में निरंतन चला आ रहा है। समय चक्र के साथ साथ निर्देशन के स्वरूप में भी कुछ परिवर्तन होता आ रहा है। ऐसा होना स्वाभाविक ही है क्योकि निर्देशन का स्वरूप समाज की सामाजिक सांस्कृतिक, धार्मिक, व्यवसायिक, शैक्षिक आदि परिस्थितियों पर निर्भर है। आदिकाल में निर्देशन का स्वरूप बहुत ही सरल था, क्योकि मनुष्य का जीवन साधारण था। उसकी आवश्यकताऐ भी सीमित थी। बच्चों को निर्देशन उनके माता द्वारा ही मिल जाता था। धीरे धीरे मशीन का युग का प्रार्दुभाव हुआ। मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रो में एक प्रकार की क्रान्ति आयी, परिणामस्वरूप निर्देशन का स्वरूप भी बदल गया। आज की जटिल समस्याओं में निर्देशन की अत्यन्त आवश्यकता है।

निर्देशन वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को स्वयं को तथा संसार को समझने में सहायता देता है, जिससे व्यक्ति अपनी इस जानकारी को स्वयं की शिक्षा, कैरियर तथा व्यक्तित्व के विकास के लिए उपयोग में लाने की समझ प्राप्त करता है(डिक्शनरी ऑफ एडयूकेशन–1973)

यदि हम अपने स्वयं के निकटवर्ती वातावरण के कुसमायोजित व्यक्तियों की संख्या पर विचार करते हैं तो भी हम बाल व्यवहार और मनोभाव के अधिक उपयुक्त निर्देशन की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं। यह तथ्य सत्य है कि एक व्यक्ति की प्रगति की गति विभिन्न विषयों अथवा व्यवसायों में एक जैसी नहीं होती है। एक छात्र जो भाषा में अच्छे अंक प्राप्त करता है हो सकता है वह गणित में उतनी सफलता प्राप्त न कर सके, उसके लिए निर्देशन की आवश्यकता पडती है।

विभिन्न देशों के निर्देशन विकासक्रम का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रायः प्रत्येक देश में व्यवसायिक निर्देशन का विकास ही सर्वप्रथम हुआ। भारत मे व्यवसायिक निर्देशन के क्षेत्र में निर्देशन सेवाओं से सम्बन्धित व्यवस्थित प्रयास प्रारम्भ हुआ ,चूकि भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही बेरोजगारी की समस्या गम्भीर थी। अतः यहां व्यावसायिक निर्देशन के क्षेत्र में निर्देशन का प्रारम्भ किया जाना स्वाभाविक था।

हमारे देश में निर्देशन की व्यवस्थित प्रक्रिया एवं उसके महत्व से परिचित कराने का सर्वप्रथम श्रेय के जी सैयटन और सोहनलाल को दिया जाता है । भारत में इस प्रक्रिया के महत्व की अनुभूति इन विद्वानो के प्रयासों के उपरान्त ही सम्भव हो सकी थी।

अध्ययन के उद्देष्य–

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी छात्रो की निर्देशन की आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

समस्या का परिसीमांकन

समय, धन एवं संसाधनों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध कार्य में अनुसंधानकर्ता द्वारा शोध समस्या के क्षेत्र को निम्नवत् सीमांकित किया गया है–

- केवल 10 वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।
- न्यादर्श के अन्तर्गत 400 छात्रो को लिया गया है।
- केवल उत्तराखण्ड बोर्ड द्वारा स्वीकृत सी0बी0एस0ई0 पाठ्यक्रम वाले विद्यार्थियों को ही लिया गया है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तराखण्ड के कुमाऊ मण्डल को अध्ययन में क्षेत्र में सम्मिलित किया गया है।

संदर्भ साहित्य

निर्देशन की आवश्यकता के सम्बन्ध में पूर्व में अनेक शोध कार्य किये जा चुके है जो भी प्रमुख शोधकार्य इस शोध प्रबन्ध से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित है, उनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है–

ई0आई0जार्ज0 (1968) ने हाईस्कूल व कालेज स्तर के विद्यार्थियो की निर्देशन की आवश्यकताओं का अध्ययन किया यह जानना चाहा कि विद्यार्थियों को निर्देशन की आवश्यकता किस क्षेत्र में अधिक है उन्होने यह पाया कि विद्यार्थियों की समस्याओं का उनकी आवश्यकताओं के साथ गहन सम्बन्ध है।

दासगुप्ता (1972) ने विद्यालय में निर्देशन सेवाओं के विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में पश्चिम बंगाल के विद्यार्थियों के विचारों का अध्ययन किया और यह पाया कि विद्यालय में निर्देशन सेवाओं को और अधिक सामाजिक स्वीकृति की आवश्यकता है अधिक अभिभावक निर्देशन के लिए जागरूक हैं निर्देशन सेवाओं के प्रति संस्थानों के प्रमुख, कैरियर मास्टरों, अध्यापकों और विद्यार्थियों का दृष्टिकोण संतोषजनक है, विद्यार्थियों को पाठय सहगामी क्रियाओं के विस्तृत कार्यक्रमों को प्रदान करने की आवश्यकता है।

ए0वी0 आर0 रेड्डी(1972) ने माध्यमिक स्कूल के छात्रों की व्यावसायिक आवश्यकता का उनके व्यवसाय चुनाव एवं उसके अन्य चरों (वेतन, कार्य दशायें, क्षेत्र) के संदर्भ में अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि विभिन्न स्थानों से आने वाले छात्रों की व्यावसायिक आवश्यकता, शक्ति, क्रियाओं, नैतिक मूल्यों, उत्तरदायित्वों, संतुष्टि स्तर, अपने सहयोगितयों के साथ सम्बन्धों, सेवाओं तथा सृजनात्मकता में कोई अन्तर नहीं पाया गया। छात्रों के व्यावसायिक चुनाव के पीछे उनके सामाजिक स्तर भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। चाहे वह किसी भी स्तर के हो या उनके क्षेत्रीय आधार पर कितना भी अन्तर है।

दण्डापानी (1976) ने निम्न निष्पादन वाले हाईस्कूल के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामूहिक निर्देशन कार्यक्रम के प्रभाव को देखने का प्रयास किया। यह पाया गया कि निर्देशन प्राप्त करने वाले निम्न निष्पादन वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि, निर्देशन प्राप्त ना करने वाले अन्य निम्न निष्पादन वाले छात्रों तथा सामान्य निष्पादन वाले छात्रों से सार्थक रूप से अधिक थी।

साह (1977) ने बम्बई के कला एवं गृह विज्ञान के महिला कालेज की स्नातक एवं परास्नातक स्तर की छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर व निर्देशन आवश्यकताओं का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि ज्यादातर छात्राओं की शादी हो चुकी है, या होने वाली है तथा उनमें व्यवसाय को लेकर किसी प्रकार की आकांक्षा नहीं है। यह भी पाया गया कि बहुत सी छात्राओं द्वारा शिक्षा, भविष्य को ध्यान में रखकर नहीं प्राप्त की जा रही है। वे केवल डिग्री प्राप्ति के उद्देश्य से शिक्षा प्राप्त कर रही है।

फर्नाडेस (1984) ने पूर्व किशोरावस्था व किशोरावस्था की लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि पर निर्देशन तथा परामर्श के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने यह निष्कर्ष पाया, कि परामर्श प्राप्त निम्न उपलब्धि वाली इन लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि परामर्श प्राप्त न करने वाली निम्न उपलब्धि व सामान्य उपलब्धि वालों की तुलना में अधिक सार्थक रूप से हैं।

कामत (1985) ने व्यक्तिगत निर्देशन द्वारा आत्म प्रत्यय में सुधार सम्बन्धी अध्ययन किया। उन्होंने यह निष्कर्ष पाया कि कोचिंग के कारण विद्यार्थियों की उपलब्धि में सार्थक रूप से सुधार होता है। आत्म प्रत्यय व्यक्तित्व का एक विकासात्मक पहलू है और यह शैक्षिक उपलब्धि में सुधार द्वारा बढ़ाया जा सकता है।

सिंह (1985) ने उत्तर प्रदेश के अभावग्रस्त घरों में रहने वाले बच्चों की निर्देशन आवश्यकताओं का अध्ययन किया। उन्होंने यह पाया कि इन अभावग्रस्त घरों के 20.30 प्रतिशत बच्चे बीमारी, सिरदर्द, थकान, अनिद्रा व शारीकि विकलांगता से ग्रस्त हैं और उन्हें इन बीमारियों की रोकथाम और उपचार के लिए चिकित्सालय सुविधाऐं उपलब्ध नहीं है। इन घरों के लगभग आधे बच्चे की जीवन की आधारभूत आवश्यकताएँ, जैसे– भोजन, कपड़ा, मकान भी पर्याप्त रूप से प्राप्त नहीं है।

कक्षाओं में सीखने का वातावरण तथा तरीका खराब हे। बुद्धि परीक्षण और उपलब्धि परीक्षण में लड़कों का समायोजन लड़कियों से सार्थक रूप से अच्छा है।

त्रिपाठी (1986) ने अपने अध्ययन में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न निर्देशन आवश्यकताओं का निर्धारण किया। उन्होंने पाया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक, व्यक्तित्व सम्बन्धी, शैक्षिक, आर्थिक, व्यावसायिक और धार्मिक आवश्यकताओं के मध्य सार्थक सम्बन्ध होता है। लड़कियों को स्वास्थ्य सम्बन्धी, सामाजिक, व्यक्तित्व सम्बन्धी, व्यावसायिक और धार्मिक निर्देशन की अधिक आवश्यकता होती है। जिन विद्यालयों में केवल बालक अथवा बालिकाएं ही अध्ययन करती हैं। उन विद्यालयों में स्वास्थ्य परिवार तथा व्यक्तित्व सम्बन्धी निर्देशन आवश्यकताओं पर ध्यान देने की अधिक जरूरत है।

गायकवाड़ (1989) ने कक्षा 10 के विद्यार्थियों की शैक्षिक और व्यावसायिक कैरियर सम्बन्धी निर्णय लेने की योग्यताओं को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया, तथा व्यावसायिक निर्देशन का इन योग्यताओं पर प्रभाव देखा। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि औसत से ऊपर के विद्यार्थी, औसत बुद्धि के कम के विद्यार्थियों की तुलना में अपने अग्रिम अध्ययन सम्बन्धी पाठ्यक्रम के प्रति निश्चित है। उच्च बुद्धि वाले विद्यार्थियों को निम्न बुद्धि वाले विद्यार्थियों की तुलना में व्यावसायिक जानकारियाँ अधिक हैं। इस अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि मनोवैज्ञानिक परीक्षण, व्यावसायिक सूचना और समूह निर्देशन कार्यक्रम, निश्चित रूप से विद्यार्थियों को उचित शैक्षिक और व्यावसायिक चयन में सहायता करते हैं।

गुप्ता (1991) ने माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का अध्ययन किया और कैरियर सचेतता तथा कैरियर सम्बन्धी निर्णय लेने की दक्षताओं के प्रशिक्षण का प्रभाव उनके कैरियर सम्बन्धी दृष्टिकोण पर देखा। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि कैरियर योजना सम्बन्धी दक्षताओं पर प्रशिक्षण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

कौर (1992) ने अपने अध्ययन में पंजाब एवं चंढ़ीगढ़ के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में निर्देशन सेवाओं का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि अधिकतर विद्यालयों में उच्च और उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के अतिरिक्त अन्य कक्षाओं में निर्देशन एवं परामर्श की एक निश्चित व्यवस्था नहीं है, और विद्यार्थियों को वैयक्तिक तथा व्यावसायिक क्षेत्रों की तुलना में शैक्षिक क्षेत्र में प्रमुख रूप से निर्देशन सहायता दी जाती है। कुछ विद्यालयों में संचालित निर्देशन कार्यक्रम अनेक समस्याओं के कारण संतोषजनक नहीं

विस्टन और लसोफ(1998) ने अपने अध्ययन में विद्यार्थी के कैरियर संबधी निर्णय लेने में परामर्ष के महत्व का अध्धयन किया । उन्होने पाया कि विद्यार्थियो का कैरियर बनाने में स्कूल परामर्ष बहुत प्रभावषाली होता है । परामर्षदाता की सहायता से विद्यार्थी उचित मार्ग को चून सकता है ।

हनिष और ग्योट्रा(2000) ने विद्यार्थीयो की सफलता पर निर्देषन का क्या प्रभाव पडता है। इसका अध्धयन किया उन्होने पाया कि स्कूल परामर्षदाता विद्यार्थीयो पर सकारात्मक प्रभाव डालते है। विद्यालय में विद्यार्थियों के व्यवहार में सकारात्मक प्रभाव पडा विद्यालय के वातावरण पर अच्छा प्रभाव पडा तथा विद्यार्थियो को सफलता प्राप्त हूई।

वेन्डे तथा कैरे (2005) ने स्कूल परामर्श के स्थिति पर अध्ययन किया उन्होंने पाया कि स्कूल परामर्शदाता और शैक्षिक विशेषज्ञों की तरह प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। स्कूल परामर्शदाता प्रशिक्षित होता है इसी कारण परामर्शदाता विद्यार्थियों के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हैं परामर्शदाता की वर्तमान स्थिति अधिक बेहतर नहीं है क्योकि सरकार ने विद्यालयों में परामर्शदाताओं के स्थान या महत्व के विषय में कोई दिशा निर्देश नहीं दिया निजी विद्यालयों में स्कूल परामर्शदाता होते हैं परन्तु सरकार विद्यालय में कोई उचित व्यवस्था नहीं की गयी है जबकि विद्यालय में स्कूल परामर्शदाता होने से सकारात्मक प्रभाव ही पडता है।

अजोवी और एनोस(2010) ने माध्यमिक विद्यालय में अनुशासन के बनाये रखने में निर्देशन तथा परामर्श की भुमिका का अध्ययन किया और यह जानना चाहा कि विद्यालय में अनुशासन को बनाये रखने में निर्देशन सहायक है या नहीं।यह पाया कि स्कूल में अनुशासित व्यवस्था स्थापित करने के लिए निर्देशन एवं परामर्श सहायक है विशेषकर दण्डों, अनुशासनिक मामलों को हल करने में निर्देशन एवं परामर्श का उपयोग किया जाता है, तथापि यह देखा गया है कि मंत्रालय की ओर से कोई शिक्षा नीति संबंधी दिशा निर्देशों नहीं दिये गये कि विद्यालय में परामर्श एवं निर्देशन दिया जाये।

लीयू (2012) ने निर्देषन द्वारा हाईस्कूल के विद्यार्थियों को उनकी क्षमता के आधार पर दी गयी सहायता के सन्दर्भ में अध्ययन किया और पाया कि न्यूयोर्क शहर के छात्रों को विद्यालय वातावरण विकास के लिये जरूरी है कि वे आन्तरिक, तार्किक व सामाजिक भावनात्मक चुनौतियों के लिये तैयार रहें जो कि उच्च षिक्षा के दौरान सामने आता है।

रानी और अन्य (2013) स्नातक विद्यार्थियों के लिये कैरियर निर्देशन व परामर्श की आवश्यकता का अध्ययन किया और यह जानने का प्रयास किया कि परामर्श द्वारा विद्यार्थी सही मार्ग का चयन करता हे या नहीं। उन्होंने पाया कि परामर्श स्नातक विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है तथा परामर्श द्वारा विद्यार्थी सही मार्ग का चयन करता है।

शोध प्रविधि

शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण निधि का प्रयोग किया गया ।उपरोक्त उददेश्यों को ध्यान में रखते हुए एक प्रश्नावली तैयार की गयी तथा गुच्छा न्यादर्श विधि द्वारा आकड़े एकत्र किये गये । यादृच्छिक न्यादर्श तकनीकी एक विधि (लॉटरी विधि) का प्रयोग करके कुमाऊ मण्डल के दो जिलों नैनीताल व अल्मोड़ा का चयन किया गया तथा प्रत्येक के दो–दो विकास खण्ड का चयन

करके प्रत्येक विकास खण्ड से 50 छात्र ग्रामीण विद्यार्थियों तथा 50 छात्र शहरी विद्यार्थियों का चयन किया गया तथा आकड़े एकत्र करने के पश्चात् टी परीक्षण द्वारा विश्लेषण किया गया ।

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पनाओ के परिक्षण हेतु उपयुक्त साख्यिकी टी परीक्षण का किया प्रयोग गया।

परिकल्पना

1 माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी छात्रो की निर्देशन की आवश्यकता मे कोई अन्तर नही है

	M1	M2	M_D	SE_{MD}	$t = M_D / SE_{MD}$
ग्रामीण छात्र व शहरी छात्रो की निर्देशन की आवश्यकता	220.055	202.35	17.705	1.37898436	12.83916

क्योकि t= 12.83916, .01 स्तर के 2.68 से बडा है हम निराकरण परिकल्पना को अस्वीकृत करेंगे। अतः माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र व शहरी छात्रो की निर्देशन की आवश्यकता मे अन्तर है।

निष्कर्ष– माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र व शहरी छात्रो की निर्देशन की आवश्यकता मे अन्तर है।तथा ग्रामीण छात्रो का माध्य, शहरी छात्रों के माध्य से बडा है तो यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों को निर्देशन की आवश्यकता शहरी छात्रों से अधिक है। माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रो व शहरी छात्रो के शैक्षिक निर्देशन का माध्य सबसे अधिक होने से यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण व शहरी छात्रो को शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता सबसे अधिक है।

BIBLIOGRAPHY

1. Ajowi,J.O. and Enose,M.W.(2010),The role of guidance and counseling in promoting student discipline in secondary schools in Kenya in Educational research and review, 5(5),263-272.
2. Best, John, and James V.Kahn (2000), Research in Education (7th Edi.), New Delhi: Prentice Hall of India Private Limited.

3. Bhatnagar, Asha & Gupta (1999), Guidance and Counselling, Vol. I: A Theortical Perspective. New Delhi: Vikas Publishing House Pvt. Ltd.
4. Bhatnagar, Asha & Gupta (1999), Guidance and Counselling, Vol. II: A Practical Approach. New Delhi: Vikas Publishing House Pvt. Ltd.
5. Buch, M.B. (Ed.) (1979), Second Survey of Research in Education (1972-78), Baroda: Society for Educational Research and Development.
6. Carey,J.C.&Harrington(2010),Nebraska school counseling evaluation report Amherst,MA:center for school counseling outcome research and evaluation.
7. Dandapani, Subramaniam (1977), The effect of a group guidance programme upon the academic achievement of high school underachievers. In second survey of Research in education (1972-78) Baroda: Society for educational research and development.
8. Dasgupta, B. (1972), Pupil's Opinion in School Guidance Service in West Bengal. In Fourth survey of research in Education (1983-88) , Vol. I, New Delhi : NCERT.
9. Dash, B.N. (2003) ,Guidance Service in School, New Delhi: Dominant Publisher and Distributor.
10. Fernades, L. (1987), A study of the effect of guidance and counselling on the Academic achievement of underachieving preadolescent and adolescent girls. In fourth survey of Research in education (1983-88),Vol.-I, New Delhi: NCERT.
11. Gaikwad, K.S. (1989), A Descriptive and experimental study of educational and vocational choices of the students after passing standard X, and of the efficacy of guidance services at different level. In fifth survey of educational research (1988-92), vol.-II, New Delhi : NCERT.
12. Gupta, S.K. (1991),A study of t he impact of training in career awareness and career decision making skills upon occupational attitudes and guidance needs of secondary school students. In fifth survey of educational research (1988-92), Vol.- II, New Delhi: NCERT.
13. Harish L.D. & Guerra N.G.(2000),Children who get victimized at school;what is known?what can be done?Professional school counseling , vol.- 4,113-119.
14. Jaiswal, Sitaram (2002), Guidance and counseling in education, Agra, Vinod Pustak Mandir.
15. Jorge, E.I. (1968), Needs and problem of High school and college students in third survey of research in education (1978-83), New Delhi : NCERT.
16. Kamat, V. (1985), Improvement of Self of self-concept through personal guidance in fourth survey of research in education (1983-88), Vol. I, New Delhi: NCERT.
17. Kaul, Lokesh (2007), Methodology of educational research, Noida: ikash Publishing House Pvt. Ltd.

18. Kaur, S (1992), Education of Guidance services in higher secondary school of Punjab and Chandigarh. In fifth survey of educational research (1988-92), Vol.- II, New Delhi : NCERT.
19. Liu,J.C.(2012),The power of guidance :giving high school student the college counseling they need,New york city comptroller.
20. Madhukar, Indira, (2004), Guidance & counselling, New Delhi: Authors Press.
21. Naik, A.K. (1997) Guidance & Counseling, New Delhi: APH Publishing Co-operation.
22. Rai, Parasnath, (1999), An introduction to research method applied to Psychology, Sociology and Education, Agra : Laxmi Narayan Agarwal Prakashan.
23. Rani,K.S.,Ananda& krishmaveni (2013), career guidance and counseling needs of guaduate students-A study in India,global research analysis vol-2,43-45.
24. Reddy, A.V.R. (1972), A study of the vocational needs of secondary school pupils (Boys) in relation to their variables, in third survey of research in education (1978-83), New Delhi: NCERT.
25. Shah, B.C. (1977), A study of guidance needs to the graduate and graduating students of arts and home science college of the SNDT women's university, in third survey of research in education (1978-83), New Delhi: NCERT.
26. Sharma, R.A. (2000), educational & vocational guidance & counselling, Meerut: R.Lal book depot.
27. Singh, S. (1985), Guidance needs of children living in destitute homes in Uttar Pradesh. In fourth survey of research in education (1983-88), Vol- I, New Delhi : NCERT.
28. Tripathi, R.H. (1986), Determination of Various guidance needs of the pupil's of secondary and higher secondary schools, in fourth survey of research in education (1983-88), Vol.- I, New Delhi : NCERT.
29. Tripathi, Madhusudan (2007), guidance & counseling in education, New Delhi: Omega Publication.
30. Verma & Upadhyay (2002) , Educational and vocational guidance, Agra, Vinod Pustak Mandir.
31. Wendy, M.C. & carey(2005),The current status of school counseling outcome research,center counseling research monographs,number 2,www.umass.edu/school counseling outcome_research@educ.umass.edu.school

Publish Research Article

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication.

Address:- North Asian International Research Journal Consortium (NAIRJC)
221, Gangoo Pulwama - 192301
Jammu & Kashmir, India
Cell: 09086405302, 09906662570,
Ph No: 01933212815
Email: nairjc5@gmail.com, info@nairjc.com
Website: www.nairjc.com